बच्चों की पसंद–नापसंद पर बातचीत

– अशोक कुमार मिश्र

बच्चों के साथ बातचीत करना उनके भाषा विकास की दृष्टि से तो महत्वपूर्ण गतिविधि मानी ही जाती है, यह गतिविधि उनके साथ सहज सम्बन्ध स्थापित करने में भी सहायक होती है। यह गतिविधि यद्यपि किसी भी कक्षा/स्तर के बच्चों के साथ सरलता से की जा सकती है किन्तु इसका विद्यालय में पहली कक्षा में पढ़ने आने वाले बच्चों के साथ करना अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। जब बच्चे पहली बार विद्यालय में आते हैं तो वे घर के परिचित और सुरक्षित परिवेश से अलग अपरिचित परिवेश में प्रवेश करते हैं जहां होने वाले प्रत्येक व्यवहार और गतिविधि के प्रति उनमें उत्सुकता के स्थान पर आशंका और हिचक अधिक होती है। ऐसे में जहां उन्हें उनकी हिचक और आशंका से उबारने की जरूरत होती है वहीं पढ़ने–लिखने के प्रति उन्हें तैयार करने का प्रयास भी साथ–साथ चलना महत्वपूर्ण होता है। इस दृष्टि से उनके साथ बातचीत एक महत्वपूर्ण गतिविधि है।

इस गतिविधि को इस प्रकार कर सकते हैं–

- बातचीत के लिए प्रारंभ में बच्चों की पसन्द नापसन्द पर बात कर सकते हैं।
- बच्चों से उनकी पसंद और नापसंद की वस्तुओं, व्यक्तियों, स्थानों और व्यवहारों आदि के बारे में जानना। सूची बनाना तथा सम्बंधित चीजों पर चर्चा करना। जैसे काम इसमें हो सकते हैं।
- पहला दिन– कक्षा के सभी बच्चों से उनके नाम पूछकर बोर्ड पर खड़ी लाइन में लिख दें। इसके बाद बात करें कि उन्हें वस्तुओं, व्यक्तियों, स्थानों और व्यवहारों क्या–क्या चीजें पसंद या नापसंद हैं। यदि शिक्षक साथी चाहें तो उपरोक्त के अलावा भी बच्चों की पसंद–नापसंद की चीजें पूछकर दर्ज कर सकते हैं। जब बच्चे बता रहे हों तो शिक्षक बोर्ड पर उनके नाम के आगे उनकी पसंद या नापसंद के नाम बोलते हुए अलग–अलग लिखते जायें। जब सभी के नाम और पसंद या नापसंद लिख चुकें तो एक बार सभी को पढ़कर सुना दें। यदि कोई अंतर है तो उसे ठीक कर दें।
- दूसरा दिन– अब बच्चों को उनकी पसंद या नापसंद की वस्तुओं में से किसी एक का पेन्सिल या पेन से रेखांकित चित्र जो चार्ट या सामान्य सादे पेज पर बना हो दे दें और उसे अपने मनपसंद रंग से रंगने को कहें। बच्चों को सूखे या जलरंग सुविधानुसार दिए जा सकते हैं। यदि बच्चे स्वयं चित्र बनाना चाहें तो उन्हें बनाने को दे सकते हैं।
- तीसरा दिन– अब बच्चों से एक–एक कर उनकी बनाई हुई पसंद या नापसंद की चीजों के चित्र कक्षा के सामने प्रदर्शित करने को कहें और उस पर उनसे और शेष बच्चों से चर्चा करें। चर्चा में निम्न प्रश्नों का सहयोग लिया जा सकता है–
- यह वस्तु तुम्हें क्यों पसंद या नापसंद है?
- इस चित्र में यही रंग क्यों भरा है?
- इस वस्तु का क्या–क्या उपयोग है?

प्रयास और भी–

1. इसी प्रकार बच्चों की पसंद और नापसंद की वस्तुओं, व्यक्तियों, स्थानों और व्यवहारों आदि को आधार बनाते हुए आवश्यकतानुसार प्रश्न बना सकते हैं और कर सकते हैं। बच्चों से बात करते समय उनकी सुविधानुसार स्थानीय बोली में बात कर सकते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि चर्चा में सभी बच्चे शामिल हों और अपने विचार रखें। कम बोलने वाले बच्चों को पहचानें और उन्हें अवसर देने का प्रयास करें। शिक्षक साथी प्रारंभ में केवल पसंद की वस्तुएं पूछकर ही पूरी गतिविधि कर सकते हैं।
2. गतिविधि करने के साथ–साथ बच्चों के बनाए चित्र उनके नाम के साथ कक्षा–कक्ष की दीवारों या किसी ऐसी जगह डिस्प्ले बोर्ड आदि पर लगा दें जिससे बच्चे उसे आसानी से देख सकें।
3. कक्षा 3, 4 और 5 के साथ भी यह गतिविधि की जा सकती है। इसमें उन्हें अपनी पसंद–नापंसद की वस्तुओं को चुनने ओर बातचीत के बाद उस पर 10–15 पंक्तियों का एक पत्र लिखने को कह सकते हैं।

(लेखक, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, देहरादून, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं।)